जो आत्मिक ज्ञान दे वही श्रेष्ठ विश्वविद्यालय

ज्ञानसरोवर। वर्द्धमान महावीर विश्वविद्यालय कोटा के कुलपति डॉ विनय कुमार पाठक ने ब्रह्माकुमारीज शिक्षा प्रभाग द्वारा 'स्वर्णिम संसार के लिए दिव्य बुद्धि' विषय पर महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों के अध्यापकों के लिए आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए कहा कि शब्द की तुलना में मौन अधिक कारगर होते हैं। हमें मैं के अहंकार से परे होना चाहिए। हम न तो अपने प्रथम श्वास को रोक सकते हैं और न ही अपने अंतिम श्वास से आगे की यात्रा कर सकते हैं। मूल्य एवं आध्यात्मिकता की शिक्षा महान शिक्षा है। हम भी अपने विश्वविद्यालय में इसका केंद्र स्थापित करेंगे।

ब्रह्माकुमारी संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी ने कहा कि भारत भूमि देवी देवताओं की कर्मभूमि रही है। जब आदि सनातन देवी देवता धर्म था तब झूठ का नामोनिशान नहीं था। सत्यता पर चलने से ही अब स्वर्णिम युग आएगा। परमात्मा गुप्त रूप से उस स्वर्णिम युग की स्थापना करा रहे हैं। राजयोग से जीवन सुखमय एवं शांतिपूर्ण बनता हैं।

वर्द्धमान महावीर विश्वविद्यालय कोटा के कुलपति डॉ विनय कुमार पाठक, दादी रतनमोहिनी, सोलन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. प्रेम कुमार खोसला, ब्र.कु.मृत्युंजय तथा अन्य दीप प्रज्जवलित करते हुए।

सोलन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. प्रेम कुमार खोसला ने कहा कि पश्चिमी शिक्षा की वजह से सांस्कृतिक व्यवस्था की समाप्ति का खतरा उभर आया है। माताएं बच्चों को आध्यात्मिक शिक्षा नहीं दे पा रही हैं। आत्मा एवं शरीर का ज्ञान देने वाला यह विश्वविद्यालय नालंदा एवं तक्षशिला विश्वविद्यालय के समान है। मन को भटकने से रोकने के लिए यही शिक्षा कारगर है। आध्यात्मिक शिक्षा के बिना हम देश को कैसे बचा पाएंगे। प्राचीन काल से भारत की प्रतिष्ठा इसके योग व अध्यात्म की वजह से रही है। वैचारिक शक्ति सबसे बड़ी शक्ति है। मैं भी अपने विश्वविद्यालय में मूल्य एवं आध्यात्मिकता की शिक्षा प्रदान करने हेतु ब्रह्माकुमारीज से अनुरोध करता हूँ।

ब्रह्माकुमारीज शिक्षा प्रभाग के उपाध्यक्ष ब्र.कु.मृत्युंजय ने दोनों विश्वविद्यालयों में मूल्य एवं आध्यात्मिकता की शिक्षा प्रदान करने की व्यवस्था करने का विश्वास दिलाया। मनुष्य को देवता समान बनने की शिक्षा प्रदान कर सके, वही सही मायनों में विश्वविद्यालय माना जा सकता है।

प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक डॉ हरीश शुक्ला ने कहा कि यह ज्ञान जीवन में दैवी बदलाव लाने वाला है। मैंने अपने बच्चों के बदलते आध्यात्मिक जीवन से प्रभावित होकर इस ज्ञान को गहराई से आत्मसात करने की सोची। मेरे बच्चे ही मेरे आध्यात्मिक गुरु बने। स्वयं परमात्मा धरा पर आकर यह ज्ञान सुना रहे हैं- इस बात की अनुभूति में मुझे वक्त तो लगा मगर मैं इस सत्य को जान गया।

प्रभाग की मुख्यालय संयोजिका ब्र.कु.शीलू ने कहा कि राजयोग के द्वारा हम मात्र अपने मन पर ही विजय प्राप्त नहीं करते बल्कि विश्व की आत्माओं के हृदयों को भी जीत सकते हैं। ब्र.कु.सुमन ने मंच का संचालन किया।

सातपुडा पर्वतों से प्रवाहित होगी आध्यात्मिक ज्ञान धारा

जिला परिषद सदस्य हरसिंग, तहसीलदार बीरबल वळवी, विजय पराडके, ब्र.कु.गंगाधर, ब्र.कु.पारू, ब्र.कु.विद्या, ब्र.कु.शीला, ब्र.कु.सरला, ब्र.कु.दिलीप दीप प्रज्जवलित करते हुए।

धडगांव। नंदूरबार जिले के सातपुडा पर्वतीय श्रृखला में बसे आदिवासी क्षेत्र धडगाव में ब्रह्माकुमारीज संस्थान के नये भवन का उद्घाटन कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। प्रतिदिन दुर्गम रास्ते को पार कर, कठिन परिस्थितियों में इस ऊँची पहाड़ी पर स्थिति गांव में पिछले चार वर्षों से सेवारत ब्र.कु.सरला कहा कि यहां के भोले भाले लोगों में ज्ञान व योग का संचार करने के लिए इस नये सेवाकेन्द्र का निर्माण हुआ है। इस गांव की बेटी ब्र.कु. गंगा ने भी आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा पवित्र श्रेष्ठ जीवन जीने की प्रेरणा ली और अपना सम्पूर्ण जीवन ईश्वरीय सेवा में समर्पित करने का संकल्प किया है। यहां के आदिवासी भाई-बहनों में ज्ञान की अलख जगाने का कार्य शिवपिता ने सातपुडा पर्वत से शुरू कर दिया है।

उद्घाटन कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए ओमशांति मीडिया के संपादक ब्र.कु. गंगाधर ने कहा कि सातपुडा पर्वतों के मध्य स्थित यह आध्यात्मिक सेवास्थान चारों ओर ज्ञान के प्रकाश को फैलायेगा तथा लोगों को श्रेष्ठ जीवन जीने की प्रेरणा देगा। राजयोग से मन की शांति व जीवन जीने की कला आती है इसलिए यहाँ की जनता को इसका लाभ उठाना चाहिए। महाराष्ट्र की धरनी से अनेक महापुरूषों व संतों का जन्म हुआ है। यहाँ से भी आध्यात्मिक चेतना से सम्पन्न अनेक भाई-बहनें तैयार होंगे।

पुणे से पधारी ब्र.कु.पारू बहन ने कहा कि यहाँ इतनी मुश्किलातों में, दुर्गम पहाड़ी में सेवा करना कठिन व चुनौतिपूर्ण है परंतु एक छोटी सी मेरी साथी ब्र.कु.सरला बहन ने यह कार्य करके दिखाया है। मैं शुभकामना देती हूँ कि यहाँ की सेवा दिन दूनी रात चौगुणा बढ़ती रहे। सभी ग्रामवासी शराब, बीड़ी व तंबाकु से मुक्त होकर सात्विक व हेल्दी रहें।

जिला परिषद सदस्य हरसिंग दादा ने कहा कि यहां की जनता भावना प्रदान है और सरला बहन ने जो ईश्वरीय ज्ञान का प्रचार यहां पर किया है वह प्रशंसनीय व गायन योग्य है। यहाँ की जनता के लिए सौभाग्य की बात है। यह ईश्वरीय ज्ञान सदा चलता रहे और लोगों में सकारात्मक बदलाव आये।

तहसीलदार बीरबल वळवी ने कहा कि मुझे विश्वास है कि यह ईश्वरीय ज्ञान लोगों तक पहुँचाने के लिए मेरे योग्य जो भी सेवा हो मैं दिल से सहयोग देने के लिए अपना सौभाग्य समझता हूँ। इस अवसर पर सभी का स्वागत ब्र.कु. सरला बहन ने किया।

माउण्टआबू से पधारे ओमशान्ति मीडिया के सीनियर डाटा मैनेजर ब्र.कु. दिलीप भाई ने सभी का आभार व्यक्त किया। ब्र.कु. शीला बहन, ब्र.कु. विद्या बहन ने भी अपनी शुभकामनायें दी। इस अवसर पर जी.प. सदस्य श्री.विजयसिंग पराडके, श्री. दिलीप पाटील भी मंचासीन थे। कार्यक्रम का संचालन ब्र.कु.भारती ने सुचारू रूप से किया।

आत्मा का परमात्मा से सम्बन्ध बनाता है राजयोग

पंजाब केसरी समाचार पत्र समूह की निदेशिका श्रीमती किरण चोपड़ा ज्ञानसरोवर में दो दिवसीय प्रवास के बाद महसूस करती हैं कि राजयोग ने केवल आत्मा और परमात्मा के बीच सम्बन्ध स्थापित करने में सक्षम है बल्कि इससे नैतिक शिक्षा का विकास और चरित्र निर्माण भी होता है। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय को ईश्वरीय विद्या प्रसार का अलौकिक केन्द्र मानते हुए वह कहती हैं कि इस संस्था का मुख्य उद्देश्य विशुद्ध आध्यात्मिक ज्ञान का प्रसार करना है। यहाँ कर्मों को सुधारने पर बल दिया जाता है। समाज व मानव मात्र की सेवा तथा जीवन में सहनशीलता को आधार बनाने का पाठ पढ़ाया जाता है।

आबू पर्वत को अत्यंत आकर्षक एवं सुंदर स्थान बताते हुए श्रीमती चोपड़ा अपने अनुभव सांझे करते हुए कहती हैं कि ज्ञानसरोवर देखने के बाद ऐसा लगता है मानो स्वर्ग को साक्षात धरती पर उतार दिया गया है। सफेद वस्त्रधारी ब्रह्माकुमारियां स्वच्छ वस्त्रों के अलावा चिन्ता रहित चेहरे पर फैली हल्की सी मुस्कान से इतना प्रभावित करती हैं कि यहीं बस जाने को मन करता है। परमात्म याद में बनाया जाने वाला भोजन भी सात्विकता का अनुभव कराता है। संस्था के परिसरों को देखकर सहज ही विश्वास हो जाता है कि स्त्री चाहे तो न केवल परिवार बल्कि समाज और देश को भी बदल सकती है। इस विश्वविद्यालय का संचालन कर रही बहनों का प्रबंधन, संस्कार, आध्यात्मिक ज्ञान और सद्व्यवहार प्रत्येक अतिथि में नयी उर्जा का संचार करता है। इस संस्था की नींव सच्चाई और शुद्धता पर खड़ी है। मनोहारी व प्राकृतिक सौंदर्य समेटे इस विश्वविद्यालय की यात्रा के दौरान स्त्री सशक्तिकरण की सार्थकता का सहज ही आभास हो जाता है।